पंडित श्री कृष्ण नारायण रातंजनकर कृत प्रात: गेय रागों की रचनाओं का सांगीतिक अध्ययन | (भैरव, बिलावल तथा तोड़ी अंग के रागों के सन्दर्भ में)

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग आगरा से संगीत विषय में पीएच०डी० की उपाधि
हेतु शोध प्रबन्ध की प्रस्तावित रूपरेखा

शोधकर्त्री

सोनिया कुमारी

शोध निर्देशक

डॉ. गौतम तिवारी

सहायक प्रवक्ता

संगीत विभाग, कला संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग आगरा 282005

2022

भूमिका

भारतवर्ष में प्राचीन काल से समाज में संगीत को एक श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है । भारतीय संस्कृति जितनी प्राचीन है, उतना ही उसका संगीत भी । भारतीय परंपरा के महत्वपूर्ण एवं प्राचीनतम ग्रंथ वेदों में भी संगीत विषयक प्रचुर सामग्री प्राप्त होती है । इनमें देवताओं के स्तुति मंत्र प्राप्त होते हैं, जिनके सुरीले ढंग से उच्चारित करने के रूप में वैदिक संगीत का आरंभ हुआ । सामाजिक और राजनैतिक उत्सवों के साथ साथ यज्ञादि के समय वीणा वादन तथा गायन के अनेक प्रमाण वेदों में प्राप्त होते हैं । सामवेद, शास्त्रीय संगीत का प्राचीनतम रूप माना जाता है । यह पूर्ण रूप से सांगीतिक है ।

संगीत कला निरंतर जीवित रहने वाली कला है जो जीवंत परंपरा के रूप में वैदिक युग से एक लंबी यात्रा करते हुए आज तक भी एक शुद्ध पवित्र सरिता की भांति बहती चली आ रही है ।

शास्त्रों के अनुसार 64 कलाएं मानी गई हैं जिनमें संगीत सर्वाधिक लोकप्रिय और हृदय पर तत्कालिक प्रभाव डालने वाली कला है । यह एक ऐसी आकर्षक कला है जो अनादि काल से ही आकर्षण का केंद्र बिंदु बन चुकी थी ,जब आदिमानव को भाषा का भी उचित प्रयोग करना नहीं आया था । हड़प्पा के उत्खननों में नृत्यरत पुरुष की खंडित मूर्ति उपलब्ध हुई है , ऐसी मूर्तियों का निर्माण संगीत प्रिय सभ्यता के अंतर्गत ही हो सकता है ।

शास्त्रीय संगीत जिसे जनसाधारण पक्का गाना कहते हैं, नियमों से बंधा हुआ है । भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा विविध शैलियों एवं वैभव से परिपूर्ण है । वह मूलभूत स्वर युक्त संयोजना जो इन्हें परिभाषित करती है राग कहलाती है । राग शब्द हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के पर्याय समान है । राग शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत धातु ' **रञ्ज '** से मानी जाती है, जिसका अर्थ है रंगना, रंजकता प्रदान करना । राग को ' **रञ्जति इति राग '** के रूप में परिभाषित किया जाता है । वर्तमान संदर्भ में राग का सर्वप्रथम उल्लेख मतंग द्वारा रचित ग्रंथ ब्रहद्देशी में प्राप्त होता है ।

प्राचीन काल से आधुनिक काल तक की लंबी यात्रा में भारतीय संगीत में अनेक उतार-चढ़ाव और परिवर्तन आए हैं । प्राचीन काल में प्रबंध आदि रचनाओं का गायन होता था परंतु कालांतर में धीरे-धीरे बाहरी संस्कृतियों के

प्रभाव से हमारी भारतीय संगीत संस्कृति भी प्रभावित हुई । परिणाम स्वरूप प्रबंध से ध्रुपद तथा ध्रुपद से ख्याल का प्रादुर्भाव हुआ । ख्याल फारसी भाषा का शब्द है, इसका अर्थ है- विचार, कल्पना, ध्यान, अनुमान इत्यादि। आधुनिक समाज में ख्याल गायन ही सर्वाधिक प्रचलन में है । ख्याल में विभिन्न रसों का प्रयोग होता है ख्याल में स्थाई व अंतर ऐसे दो भाग ही बहुदा प्राप्त होते हैं । ख्याल गायक त्रिताल, तिलवाड़ा, झूमरा, एकताल इत्यादि तालों का प्रयोग ख्याल गायन में करते हैं । ख्याल के विकास के काल में 19वी शताब्दी , संगीत में क्रांतिकारी परिवर्तनों की शताब्दी थी । यह काल वो काल था जब समाज में सभी क्षेत्रों में उथल-पुथल हो रही थी । यह काल अनेक महात्माओं के अवतरण का काल था जिन्होंने समाज के अलग-अलग क्षेत्रों में क्रांति ला दी थी । राजनैतिक उथल-पुथल भी थी, गांधी, नेहरू, पटेल जैसे महान नेता भी थे, स्वामी विवेकानंद जैसे धार्मिक संकीर्णताओं पर प्रहार करने वाले महात्मा थे, गुरु रवींद्र नाथ टैगोर जैसे विद्वान समाज को सांस्कृतिक रूप से नई दिशा दे रहे थे ।

वहीं संगीत के क्षेत्र में विष्णुद्वय संगीत में फैली कुरीतियों को हटाने और संगीत को सभ्य समाज में सम्मानजनक स्थान दिलाने के लिए युद्ध स्तर पर प्रयासरत थे । ऐसे ही क्रांतिकारी युग में (बीसवीं शताब्दी का आरंभ) 31 दिसंबर १९०० को एक मराठी परिवार में पंडित श्री कृष्ण नारायण रातंजनकर जी का जन्म हुआ ।

अपने गुरु पंडित विष्णु नारायण भातखंडे की परिपाटी पर चलकर रातंजनकर जी ने जीवन पर्यंत संगीतोपासना के साथ संगीत को सुपरिमार्जित अवस्था तक पहुंचाने के लिए अथक प्रयास किए । मैरिस म्यूजिक कॉलेज के अपने लंबे कार्यकाल में शिक्षा देकर अनेक उच्च कोटि के शिष्य तैयार किए । अनेक नए रागों व तालों की रचना की । कई रागों में बंदिशों की रचना भी की जो अभिनव गीत मंजरी के नाम से तीन भागों में संकलित है । पंडित रातंजनकर जी की रचनाओं की कुछ विशेषताएं निम्नलिखित हैं:-

१ संस्कृत भाषा में ख्याल रचनाएं ।

२ टप्प ख्याल की रचनाएं ।

३ कर्नाटक शैली के वर्णम के आधार पर हिंदुस्तानी रागों में रचनाएं ।

४ तरानो में फारसी के स्थान पर संस्कृत साहित्य का प्रयोग ।

५ कर्नाटक तालों में रचनाएं ।

६ स्व निर्मित तालों का प्रयोग ।

७ रागों के विशेष सौंदर्यात्मक पक्षों को उजागर करने हेतु विशिष्ट स्वर प्रयोग उदाहरणत: राग मारू बिहाग में राग ललित की भांति दोनों मध्यम का प्रयोग इत्यादि ।

पंडित जी की उपलब्ध लगभग 500 रचनाओं में से लगभग 150 रचनाएं प्रातः काल में गाई जाने वाली है । पंडित रातंजनकर कृत अभिनव गीत मंजरी पुस्तक के तीन भागों में उनके द्वारा रचित लगभग 500 बंदिशों का संग्रह है जिनमें विभिन्न तालों में ध्रुपद शैली की रचनाएं, ख्याल शैली की रचनाओं में विलंबित ख्याल, मध्य लय ख्याल, तराने और टप्प ख्याल हैं । इनके अतिरिक्त स्मृति गीत, ऋतु गीत, भजन, देशभक्ति गीत, संस्कृत के स्तोत्र, दादरा, ठुमरी, राग एवं तालों के लक्षण गीत आदि संकलित हैं । साहित्य के आधार पर वर्गीकृत उपरोक्त गीत प्रकारों के अतिरिक्त पंडित रातंजनकर जी की रचनाओं में अनेक सांगीतिक विशेषताएं भी परिलक्षित होती हैं जिनका क्व्चित विवरण ऊपर दिया गया है । उनकी बंदिशों के इसी पक्ष को उजागर करने हेतु शोधकर्त्री ने निम्न विषय का चयन किया है ।

<u>विषय कथन</u> :- पंडित श्री कृष्ण नारायण रातंजनकर कृत प्रातः गेय रागों की ख्याल रचनाओं का सांगीतिक अध्ययन। (भैरव, बिलावल तथा तोड़ी अंग के रागों के संदर्भ में)

<u>सम्बंधित साहित्य का सर्वेक्षण</u> :- संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण से तात्पर्य शोध के विषय से संबंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों ज्ञान कोशों पत्र-पत्रिकाओं प्रकाशित और अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों से हैं जिनके अध्ययन से शोधकर्त्री को अपने विषय के चयन पर कल्पनाओं के निर्माण व अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिली है । अत: शोधकर्त्री ने समय की सीमा में निबद्ध अपने शोध कार्य

की रचना के साथ उपलब्ध शोध प्रबंध तथा लघु शोध प्रबंध आदि का अध्ययन किया है, जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:-

<u>शोध प्रबंध</u>

1 घराने का शास्त्रीय संगीत में सृजनात्मक योगदान राजेश गोपाल राव केलकर महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बडौदा (2015)

2 पंडित श्री कृष्ण नारायण रातंजनकर जी का संगीत के क्षेत्र में योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन डॉ गौतम तिवारी दयालबाग शिक्षण संस्थान आगरा (2014)

3 बीसवीं शती के कतिपय मूर्धन्य वाग्यकारों द्वारा निर्मित नवीन राग रूपों का साहित्यिक व विश्लेषणात्मक अध्ययन डिंपल शर्मा दयालबाग शिक्षण संस्थान आगरा (2011)

4. उत्तर भारतीय संगीत के ख्याल गायन की समृद्धि में प्रमुख आधुनिक वाग्यकारों का सांगीतिक योगदान, श्रीमती नीरा ग्रोवर (मदन) एस एन डी टी महिला विश्वविद्यालय, मुम्बई (1998)

<u>लघु शोध प्रबंध</u> :-

1 पंडित श्री कृष्ण नारायण रातंजनकर जी द्वारा बिहार अंग में निर्मित अल्प प्रचलित रागों की बंदिशों का अध्ययन, लता कुमारी, दयालबाग शिक्षण संस्थान, आगरा (2019)

2. पंडित श्री कृष्ण नारायण रातंजनकर जी की बंदिशों का अध्ययन (साहित्य के संदर्भ में), कुमारी प्रियंका , दयालबाग शिक्षण संस्थान, आगरा (2018)

उपर्युक्त शोध प्रबंधों एवं लघु शोध प्रबंधों के अध्ययन के पश्चात शोधकर्त्री ने पाया कि पंडित श्री कृष्ण नारायण रातंजनकर से संबंधित शोध कार्य कुछ शोधार्थियों के द्वारा किए जा चुके हैं । डॉक्टर गौतम तिवारी जी ने अपने शोध प्रबंध में पंडित जी के संगीत के क्षेत्र में योगदान पर विस्तृत कार्य किया है । शोधकर्त्री डिंपल शर्मा और शोधकर्त्री श्रीमती नीरा ग्रोवर जी ने अपने शोध कार्य में पंडित जी का परिचय वाग्यकार के रूप में दिया है । रातंजनकर जी आगरा घराने के प्रतिष्ठित कलाकारों में से एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व हैं अत: राजेश

गोपाल राव केलकर जी ने अपने शोध प्रबंध में पंडित रातंजनकर जी का परिचय , आगरा घराने का भारतीय संगीत में रचनात्मक योगदान, के तहत दिया है ।

लघु शोध प्रबंधों की श्रंखला में कुमारी प्रियंका ने पंडित जी की बंदिशों का अध्ययन साहित्य के संदर्भ में किया है जबकि कुमारी लता ने पंडित जी द्वारा बिहाग अंग में निर्मित अल्प प्रचलित रागों की बंदिशों का अध्ययन किया है ।

उपर्युक्त साहित्य के सर्वेक्षण के पश्चात शोधकर्त्री को ज्ञात हुआ कि पंडित जी की भैरव बिलावल और तोड़ी अंग की प्रात: गेय ख्याल की बंदिशों पर पूर्व में कोई कार्य नहीं हुआ है । अतः शोधकर्त्री ने प्रस्तावित शोध विषय का चयन बंदिशों के सांगीतिक अध्ययन हेतु किया है ।

<u>विषय से प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या</u> :-

प्रात: गेय - प्रात: अर्थात दिन का प्रारम्भ , दिन के प्रारम्भ या भोर के समय गायी जाने वाली सांगीतिक रचनायें प्रातः गेय रचनायें कहलाती है ।

ख्याल - ख्याल भारतीय संगीत का एक रूप है । वस्तुत: यह ध्रुपद का ही एक भेद है।

अंग - प्रमुख रागों में ऐसे स्वर समूह होते है जो उस राग की स्वतंत्र छवि का निर्धारण करते है, इन स्वर समूहों को राग का अंग कहा जाता है। ये स्वर समूह जब दूसरे रागों में प्रयोग किये जाते है तब वह प्रयोज्य राग उस अंग का राग कहलाता है तथा इन प्रमुख रागों को रागांग राग कहा जाता है । उदाहरण के लिये भैरव एक रागांग है , भैरव के स्वर समूह या अंग रामकली में प्रयोग किये जाते है अत: रामकली को भैरव अंग का राग माना जाता है।

सांगीतिक अध्ययन - किसी सांगीतिक रचना में प्रयोग किये गये स्वर ,लय, ताल, शब्द (साहित्य), आदि के आधार पर किया गया अध्ययन , उस रचना का सांगीतिक अध्ययन कहलाता है ।

<u>अध्ययन के उद्देश्य</u> :-

1. पंडित श्री रातंजनकर जी का परिचयात्मक अध्ययन |

2. पंडित श्री रातंजनकर जी का संगीत के क्षेत्र में योगदान |
3. पंडित जी के द्वारा बंदिश रचना की विशेषताओं का अध्ययन |
4. पंडित श्री रातंजनकर जी के रागों में भैरव, बिलावल एवं तोड़ी अंगो के रागों का विश्लेषण|
5. पंडित श्री रातंजनकर जी द्वारा रचित बंदिशों के सांगीतिक सौंदर्य का अध्ययन |

<u>विषय का परिसीमांकन</u> :-

शोधकर्त्री ने समय सीमा को ध्यान में रखते हुए पंडित रातंजनकर कृत प्रातः गेय रागों की ख्याल रचनाओं में से केवल भैरव, बिलावल तथा तोड़ी अंग के रागों का चयन किया है। प्रत्येक अंग में से ६-६ रागों का चयन किया गया है जो निम्नलिखित है:-

भैरव अंग - १. राग भैरव, २. राग अहीर भैरव, ३. राग आनंद भैरव, ४. राग गुणक्री, ५. राग प्रभात भैरव, ६.राग रामकली

बिलावल अंग - १. राग बिलावल, २. राग अल्हैया बिलावल, ३. राग देवगिरि बिलावल, ४. राग कुकुभ बिलावल, ५. राग शुक्ल बिलावल, ६. राग यमनी बिलावल

तोड़ी अंग - १. राग तोड़ी, २. गुर्जरी तोड़ी, ३.राग बिलासखानी तोड़ी, ४. राग भूपाल तोड़ी, ५. राग सालगवराली, ६. आसावरी तोड़ी

<u>शोध के स्रोत</u> :- विषय से संबंधित तथ्यों का संकलन पुस्तकालयों,संग्रहालयों, दृश्य-श्रव्य सामग्री, इंटरनेट एवं संगीत जगत के कलाकारों व विद्वानों से विचार विमर्श कर एवं साक्षात्कार के माध्यम से किया जाएगा ।

<u>शोध का महत्व</u> :- पंडित रातंजनकर जी की बंदिशों के अध्ययन से जहां भारतीय रागों के विस्तृत रूप और स्वर प्रयोग का पता चलता है, वहीं दूसरी ओर रागों का गहन अध्ययन भी सुलभ हो जाता है । इनकी बंदिशों के अध्ययन से रागों के कई अनछुए पक्ष उजागर होते हैं जो संगीत के सभी जिज्ञासाओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं । पंडित रातंजनकर जी की बंदिशों में सम का महत्व, ताल का वज़न, मुखड़े की रचना, राग के स्वरों और स्वर संगतियों का विलक्षण प्रयोग आदि अनेक ऐसे पक्ष हैं जिन पर विस्तृत शोध आवश्यक है । रातंजनकर जी

के संगीतिक कार्यों पर शोध तो हुए हैं परंतु बंदिशों पर विस्तृत शोध कार्य नहीं हुआ है । अत: शोधकर्त्री उनकी बंदिशों के संगीतिक अध्ययन पर शोध करना अपना पुनीत कर्तव्य समझती है ।

<u>अध्ययन का विभाजन</u> :- समस्त विषय सामग्री से संकलित तथ्यों का अध्ययन विश्लेषण निम्नलिखित अध्यायों के अंतर्गत किया जाएगा:-

भूमिका

1. प्रथम अध्याय :- पंडित श्री कृष्ण नारायण रातंजनकर : परिचयात्मक अध्ययन

2. द्वितीय अध्याय :- पंडित श्री कृष्ण नारायण रातंजनकर कृत सांगीतिक रचनाएं

अ. स्वनिर्मित राग

ब. स्वनिर्मित ताल

स. नवनिर्मित बंदिशें

3. तृतीय अध्याय :- भैरव अंग की ख्याल रचनाएं : सांगीतिक अध्ययन

4. चतुर्थ अध्याय :- बिलावल अंग की ख्याल रचनाएं : सांगीतिक अध्ययन

5. पंचम अध्याय :- तोड़ी अंग की ख्याल रचनाएं : सांगीतिक अध्ययन

6. षष्ट अध्याय :- उपसंहार

<u>संदर्भ ग्रंथ सूची</u> :-

1. रातंजनकर, आचार्य श्री कृष्ण नारायण, अभिनव गीत मंजरी, आचार्य एस. एन. रातंजनकर फाउंडेशन दादर, मुम्बई

2. रातंजनकर, श्री कृष्ण नारायण, अभिनव संगीत शिक्षा (प्रथम भाग) श्री गणेश रामचंद्र भटकल, मैनेजर पॉपुलर बुक डिपो, लेमिंगटन रोड , मुंबई ७

3. गर्ग, प्रभुलाल, संगीत सागर, संगीत कार्यालय, हाथरस

4. भातखंडे, पंडित विष्णु नारायण, क्रमिक पुस्तक मालिका (भाग- 4, भाग-5) भालचंद्र सीताराम सुकथनकर, मुंबई

5. मुटाटकर, सुमति, श्री कृष्ण नारायण रातंजनकर 'सुजान'

6. https://wikivisually.com/wiki/Shrikrishna_Narayan_Ratanjankar

7. https://marathivishwakosh.org/33244/

8. https://davidphilipson.com/music/ratanjankar/